ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 4, July - August 2024

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

आलमशाह की कहानियों की वर्तमान प्रासंगिकता

प्रियंका यादव

सहायक आचार्य, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़

सार: 17 मई 2018 को प्रोफेसर आलमशाह खान की 15 वीं पुण्यतिथि पर एक स्मृति संगोष्ठी का आयोजन माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में किया गया। संगोष्ठी के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार श्री आबिद अदीब ने कहा कि प्रो.आलमशाह ख़ान प्रगतिशील चेतना के रचनाकार थे। उनके लेखन में समाज के वंचित एवं शोषित तत्वों की पीडा को उजागर किया गया है। वर्तमान समय में जब मानवता पर खतरा मंडरा रहा है व सारे जनतांत्रिक मूल्य भुला दिए जा रहे हैं तब उनका लेखन और अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

I. परिचय

मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष के रुप में समकालीन विषयों पर लिखे उनके आलेख व्यवस्था के अंतर्विरोधों को रेखांकित करते हैं । इस अवसर पर डॉ.आलम शाह ख़ान की पुत्री डॉ. तराना परवीन ने प्रस्ताव किया कि डॉ. खान के समग्र लेखन का प्रकाशन किया जाना आवश्यक है। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र की विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सुधा चौधरी ने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालय के प्राध्यापक व अन्य कर्मचारियों के संस्मरण एकत्रित कर उनका प्रकाशन किया जाना चाहिए ।सुखाडिया विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की सह आचार्य डॉ मीनाक्षी जैन ने कहा कि प्रोफेसर खान के पत्रों का भी संकलन किया जाना चाहिए ।[1,2,3] मीरा कन्या महाविद्यालय की डॉ. फरहत बानो ने सुझाव दिया कि प्रो. खान के व्यक्तित्व एवं सामाजिक जीवन में उनके योगदान को भी रेखांकित किया जाना चाहिए। मीरा कन्या महाविद्यालय के हिंदी विभाग की सहआचर्य डॉ.इंदिरा जैन ने कहा कि उनके लेखन पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया जा सकता है। जनवादी मजदूर यूनियन के संस्थापक डी. एस.पालीवाल का कहना था कि खान साहब का लेखन कैसे आम जनता तक पहुंचे और आम लोग कैसे लेखन की ओर प्रेरित हों इस पर भी विचार किया जाना चाहिए ।श्रमजीवी महाविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर डॉ हेमेन्द्र चंडालिया ने कहा कि देश भर में फैले प्रो. खान के साहित्य के प्रशंसकों एवं विद्वानों से संपर्क कर समालोचनात्मक आलेख एकत्रित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि "परायी प्यास का सफ़र" , "किराये की कोख" , "सांसो का रेवड़", "एक गधे की जन्म कुंडली" जैसी कालजयी रचनाओं के लेखक डॉ आलम शाह खान के समग्र कार्य का मूल्यांकन अभी सही अर्थों में बाकी है| आबिद अदीब के प्रस्ताव पर उनकी अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जिसमें प्रो.हिमांशु पंड्या ,प्रो. पल्लव ,प्रो. सुधा चौधरी ,प्रो.हेमेन्द्र चंडालिया एवं प्रो.तराना परवीन को सम्मिलित किया गया। समिति शीघ्र ही एक पत्र लिखकर प्रकाशन [2,3,4]हेतु आलेख आमंत्रित करेगी |

‘मिथकों के पीछे संस्कृति का संजाल होता है। परिवेश में प्रवेश किए बिना साहित्य को नहीं समझा जा सकता।’ ये विचार विख्यात आलोचक प्रो. नवलकिशोर ने उदयपुर में आलमशाह यादगार समिति द्वारा आयोजित एक समारोह में प्रो. आलम शाह खान द्वारा लिखित पुस्तक मीरांः लोकतात्त्विक अध्ययन का लोकार्पण करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि प्रो. आलम शाहने डूबकर मीरां को समझा और मीरां को देखने समझने की नई दिशा दी। प्रो नवलकिशोर ने खान साहब के साथ व्यतीत समय को याद किया और कहा कि 1989 में जब यह किताब आई थी तब अचर्चित रह गई थी, अब इसका पुनर्नवा संस्करण भूल-सुधार का अवसर देने वाला है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. माधव हाड़ा ने बताया कि प्रो. आलम शाह खान द्वारा पहली बार मीरां के व्यक्तित्व को स्थानिक रूप से समझते हुए मीरां के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं एतिहासिक दृष्टिकोण को समाज के समक्ष रखने का प्रयास किया गया। उन्होंने कहा कि मीरां पर किया गया प्रो आलम शाह का अध्ययन आगे बड़े अध्ययनों में सहयोगी और पथ प्रदर्शक सिद्ध होगा।

दिल्ली विश्वविद्यालय से आए युवा आलोचक और इस पुस्तक के पुनर्नवा संस्करण के संपादक डॉ. पल्लव ने 'मीरांः एक लोकतात्त्विक अध्ययन' पर संपादकीय टिप्पणी प्रस्तुत की। उन्होंने पुस्तक के पुनः प्रकाशन की आवश्यकता का जिक्र करते हुए बताया कि इस पुस्तक में मीरां को पहली बार लोक के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया गया है। उन्होंने कहा कि अपने पुरखों का स्मरण और उनके महत्त्वपूर्ण प्रदेय का उल्लेख इस आत्मकेंद्रित समय में अधिक आवश्यक है ताकि हम अपनी परंपरा को सही तरीके से समझ सकें।

कवयित्री रजनी कुलश्रेष्ठ ने बताया कि मीरां के पदों में कृष्ण भक्ति के साथ सामाजिक सरोकारों से संबंधित समस्त प्रकार के मानवीय रिश्तों का बखूबी वर्णन उपलब्ध है। उन्होंने प्रो. आलम शाह के व्यक्तित्व से जुड़े कुछ प्रसंग भी सुनाए। मीरा कन्या महाविद्यालय की

पूर्व प्राचार्य मंजू चतुर्वेदी ने बताया कि मीरां की भक्ति एवं कविता में इतनी शक्ति है कि 500 वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो जाने के पश्चात भी वह प्रासंगिक है और इसी तरह खान साहब की पुस्तक भी 30 साल बाद भी प्रासंगिक है।

कार्यक्रम की शुरूआत में युवा कथाकार और प्रो. आलम शाह खान की पुत्री डा. तराना परवीन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और प्रो. खान की बड़ी पुत्री डाॅ. तब्बस्सुम ने मुख्य अतिथियों का फूलों से अभिनंदन किया। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की शोधार्थी नेहा द्वारा कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रो. आलम शाह खान के जीवन और उनके द्वारा किये गये लेखन का परिचय प्रस्तुत किया गया।

प्रो. आलम शाह खान यादगार समिति के वरिष्ठ सदस्य आबिद अदीब ने उदयपुर के जनतांत्रिक आंदोलनों में धर्मिक सहिष्णुता बनाए रखने में प्रो खान के योगदान के संस्मरण सुनाते हुए उनके लेखन को याद किया। अंत में गीतकार किशन दाधीच ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार उग्रसेन राव ने किया। कार्यक्रम में प्रो अरुण चतुर्वेदी, शंकरलाल चौधरी, [4,5,6]ज्योतिपुंज पंड्या, डॉ बी आर बारूपाल, संजय व्यास, लक्ष्मण व्यास सहित नगर के अनेक साहित्यकार और प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे।

II. विचार-विमर्श

सुप्रसिद्ध लेखक डॉ.आलम शाह ख़ान की कहानियाँ वर्तमान समय में बहुत प्रासंगिक हो गई हैं। भारतीय सामाजिक जीवन का गहराई से अनुसंधान करके, पाठक की जड़ता को तोड़ते हुए उसे परिवर्तन के लिए उद्वेलित करती हैं I यही उनकी विशिष्टता है जो उनको 'वक्त से आगे का रचनाकार' बनाती है तथा उनकी रचनाओं को कालजयी बनाती है। ये विचार आलमशाह ख़ान यादगार समिति द्वारा आलमशाह ख़ान की पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित चार दिवसीय व्याख्यान श्रंखला -" आलमशाह ख़ान: व्यक्तित्व एवं कृतित्व" विषयक में उभरकर आये।

इसमें चार दिन तक देश के जाने-माने लेखकों एवं विचारकों ने विभिन्न विषयों पर लिखी उनकी बारह कहानियों का गहराई से विश्लेषण किया। कार्यक्रम की संयोजक डॉ तराना परवीन ने बताया कि पहले दिन सत्रह मई को "कहानी एवं डाक्टर आलमशाह खान" विषय पर बनास जन के सम्पादक,आलोचक और दिल्ली विश्वविद्यालय में व्याख्याता डा. पल्लव और वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने फेसबुक लाईव पर विषय प्रवेश कराते हुए प्रो. आलमशाह खान के संस्मरण सुनाऐ और वर्तमान समय में साहित्य की भूमिका के साथ ही आधुनिक कहानी के विकास में खान साहब की महती भूमिका की चर्चा की।

अठ्ठारह मई को "आलम शाह खान:व्यक्तित्व एवं कृतित्व"पर प्रथम व्याख्यान श्रृंखला फेसबुक पर लाइव की गई। प्रथम कड़ी में श्री विजय रंचन पूर्व आईएएस एवं फिल्म क्रिटिक ने कहा कि 'किराए की कोख' कहानी जिस पर "कोख" नामक फिल्म बनी है को पढ़ने के बाद आप इतने विचलित हो जाते हैं कि आसानी से नींद नहीं आ सकती। उनकी कहानियों में स्तम्भन 'बोध' की भूमिका बनाता है तो विचलन कार्य के लिए उत्तेजित करता है । यह विचित्र काव्य रस स्वाद है जो हिंदी कहानी में कहीं देखने को नहीं मिलता, सिर्फ आलम शाह खान की कहानियों में दिखता है। वे हिंदी के प्रथम कहानीकार हैं जिनकी कहानियों में विभत्स अन्त तक विभत्स ही रहता है तथा जो लिखते हैं कि उन्हें इतिहास के साथ-साथ भूगोल भूगोल भी परेशान करता है । उनकी कहानियों में इतिहास के स्थान पर भूगोल यानी कि ज़मीनी हकीकत की विद्रूपता बहुत प्रबलता से प्रकट होने के बावजूद उनमें कोई कड़वाहट नहीं आती तथा उनकी मानवीय करुणा का दरिया बहता ही रहता है।[6,7,8]

इसी सत्र में जयपुर के वरिष्ठ साहित्यकार श्री ईश मधु तलवार ने "एक और मौत" कहानी पर चर्चा करते हुए कहा कि इस कहानी में

आलम शाह ख़ान इतनी खूबी से उपेक्षित तबके की तस्वीर शब्दों के ज़रिए सामने लाते हैं कि उसका दर्द सीने में सीधा उतरता है। इस कहानी में कुल्फी वाला सिर्फ कुल्फी ही नहीं सूरज की झुलसा देने वाली किरणें भी ढोता है । पड़ोस में हुई जवान मौत में जब उसे जबरन शामिल होना पड़ता है जिससे उसकी उस दिन की कुल्फियां,जिसे उसने अपने बच्चे के पैर का चांदी का तार चुराकर, बेचकर बनाई थी बिगड़ जाती हैं तो यह एक और मौत या उसकी खुद की मौत होने के बराबर ही था। शव यात्रा में शामिल हो उसका राम नाम सत्य की जगह 'कुल्ही मलाई' की टेर लगा देना उसके बिगड़े हुए मानसिक संतुलन को दर्शाता है। इस तरह कहानी का अंत सिर्फ प्रोफ़ेसर खान ही कर सकते थे। उनकी दूसरी कहानी "किराए की कोख" जो कि सारिका में छपी थी तथा बहुत चर्चित हुई थी को उन्होंने बहुत ही मार्मिक और अंदर तक धंस जाने वाली कहानी बताया और कहा कि आलम शाह ख़ान चाहते थे कि संसार बहुत सुंदर बने जो कि साहित्य का उद्देश्य होता है और उनका यह सपना पूरा होने की उम्मीद की।

प्रोफेसर हेमेंद्र चंडालिया ने "मौत का मजहब" कहानी को आज की कहानी बताते हुए कहा कि आज के दौर में जब मौत का तांडव कोरोना की वजह से चारों ओर फैला है और धार्मिक उन्माद तथा निराशा छाई है तब यह कहानी हमें अंधेरे में प्रकाश देती है और यह निराशा के दौर में उम्मीद की किरण बनकर सामने आती है। कहानी भोपाल गैस त्रासदी की तर्ज़ पर लिखी गई है। तब भी हवाओं में जहर घुल गया था और आदमी एक सांस के लिए तड़प रहा था, आज भी हवाओं में ज़हर है और आज भी आदमी एक सांस के लिए तड़प रहा है। तब भी लाशों का ढेर था आज भी है। कहानी की शुरुआत एक ओर कब्रें तो दूसरी ओर चिताएं तैयार होने से होती है। कहानीकार बताता है कि लाशों के ढेर को मजहब के हिसाब से कतारों में रखा जा रहा है "जो लोग जीते जी आटा-केरोसिन की लाइनों में साथ लगे थे बाद मरने के अपने अपने मजहब के एतबार से अलग-अलग कतारों में लगा दिए गए"। यह स्थिति 1944,1984,1992 और आज 2021 तक कायम है। लेखक इस कहानी द्वारा धार्मिक उन्माद एवं असहिष्णुता से निकलकर तार्किक, वैज्ञानिक और मानवीय दृष्टिकोण के विकास के लिए प्रेरित करता है। चौथे वक्ता डॉ. आशीष सिंह ने उन्हें साठोत्तर के दशक के बाद के महत्वपूर्ण कहानीकार बताते हुए कहा कि उनकी भाषा, चरित्र गठन, तकनीक और परिवेश चित्रण उनको समकालीन लेखकों से अलग ही स्थान प्रदान करता है । उनकी कहानियों में स्त्री पात्रों की चर्चा करते हुए कहा कि "चीर हरण के बाद"," आज की द्रौपदी"," एक और सीता"आदि में जो स्त्रियां हैं वे जिंदगी से जूझती हुई जिंदगी की तलछट में जीती हुई हार नहीं मानने वाली स्त्रियां हैं। उनकी सभी कहानियों में नरेटर कहीं नहीं है, कहानी के संवाद ही पात्रों की जद्दोजहद और परिवेश को बयान करते हैं। इसी वजह से उनकी कहानियां हिंदी साहित्य में एक अलग स्थान रखती हैं।

कार्यक्रम की दूसरी श्रृंखला में उन्नीस मई को जयपुर की डा. प्रणु शुक्ला ने डा. आलमशाह ख़ान को एक चेतनावादी रचनाकार बताते हुए कहा कि उनकी कहानी "अबला जीवन का गणित" स्त्री विमर्श की प्रतिनिधि कहानी है। यह एक देहाती स्त्री जसोदा की कहानी है जिसने सिर्फ बच्चे जनने में और दूसरों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत किया है, परंतु पचास की उम्र के बाद उसे आत्मबोध होता है तथा अब वह अपना जीवन अपने लिए ,अपनी पसंद – नापसंद के हिसाब से जीना चाहती है । लेखक चाहता है कि स्त्रियों को आत्मबोध और अस्तित्व बोध हो और वे स्वयं के लिए भी जीना सीखें। "भूखे फरिश्ते खुशबू की दावत " कहानी में लेखक ने छोटे भूखे गरीब बच्चों को खुशबू सूंघने से भी वंचित करने की दिल दहलाने वाली कथा को ऐसे ताने-बाने में बुना है कि पाठक उनकी भूख मजबूरी और दर्द को महसूस करता है। वे कहानियों के कथानक का ऐसा चित्रण करते हैं कि स्वयं रचना प्रक्रिया के भीतर उतर जाते हैं और पाठक को भी उस पीड़ा को महसूस करा देते हैं । कहानी के रचाव और निर्माण प्रक्रिया में कहानीकार का इतना संगुंम्फन है कि अगर कुछ भी हटा दे तो कहानी अधूरी लगेगी। आलम शाह खान के चरित्रों की खासियत है कि वे घिघियाते या गिड़गिड़ाते नहीं हैं वरना अपनी पूरी शक्ति को पूंजीभूत कर हालात से उठकर खड़े होते हैं और समाज के सामने अपना एक नया रूप प्रस्तुत करते हैं। डा.इन्दिरा जैन ने डॉक्टर आलम शाह ख़ान के व्यक्तित्व पर बोलते हुए कहा कि वे यथार्थवादी व्यक्ति थे जो बात जैसी है उसे वैसी कहने में उन्हें कोई झिझक नहीं होती थी। हिंदी के कुछ शब्द तो उनसे मिलकर बात करने से ही समझ आ जाते थे। "बर्थडे पार्टी" कहानी में उन्होंने बड़ी रचनात्मकता से बाल मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। "कुंवारा सफर" कहानी में निम्न मध्यम वर्ग की बेटियों को उनकी शादी को लेकर कितनी मानसिक वेदना झेलनी पड़ती है इसका बड़ा ही मर्मस्पर्शी एवं अनोखे ढंग का विवरण है। उनकी अन्य कहानियों की तरह ये दो कहानियां आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि भारतीय समाज आज भी उसी दोराहे पर खड़ा है।[8,9,10]

डा. गोपाल सहर ने उन्हें एक प्रतिबद्ध लेखक बताते हुए कहा कि उनका व्यक्तित्व पहाड़ जैसा था, जिसमें ऊंचाई एवं गहराई दोनों थी। ऊपर से रूखा-सूखा दिखने वाले किंतु उनके अंदर संवेदना के झरने बहते थे। "खूनी-खेती" कहानी का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि वे मानवीय संवेदनाओं को अपने जीवन एवं कहानियों दोनों में बेबाकी से बयान करने वाले बेजोड़ कहानीकार हैं। डा. प्रमिला चण्डालिया ने "मेहंदी रचा ताजमहल" को मानवीय प्रेम की अनमोल कहानी बता कर कहा कि उदात्त मानवीय प्रेम के वैश्विक प्रतीक ताजमहल को मेहंदी की भीनी भीनी खुशबू और सुर्ख रंग में जनसामान्य दुलारी के की हथेली पर उकेरने का साहस सिर्फ डॉक्टर आलम शाह खान ही कर सकते थे । संविधान के अनुसार अपने विश्वास का पालन करने का अधिकार हर व्यक्ति को है। अपनी वैचारिक स्पष्टता के द्वारा डॉ ख़ान ने इस कहानी के द्वारा देश के सामाजिक सांस्कृतिक ताने-बाने को बनाए रखने का संदेश दिया है जो आज भी अत्यंत प्रासंगिक है । उन्होंने कहा कि इस कहानी का अनुवाद अधिक से अधिक भाषाओं में होना चाहिए।

चौथे दिन इक्कीस मई को सम्पन्न तीसरी कड़ी मे वरिष्ठ पत्रकार श्री उग्रसेन राव ने 'बाँधो ना नाव इक ठाँव" और 'तिनके का तूफान" कहानियों का विश्लेषण कर बताया कि शिल्प , कथावस्तु , भावभूमि और प्रभाव-प्रेरणा की कसौटी पर डा.आलमशाह खान की सभी कहानियां निस्संकोच उच्च कोटि के साहित्य में स्थान बनाती हैं। उक्त दोनों ही कहानियों में विवाह के बंधन की नये सिरे से

व्याख्या की गई है, जिससे पति – पत्नी के सम्बंध फिर से परिभाषित हुए हैं। इनमें यौन संसर्ग गौण है किन्तु परस्पर सहयोग, सम्मान और मैत्री प्रमुख है, जिन्हें सामाजिक कुरीतियों ने बंधक बना लिया है। । डा. हेमेंद्र पानेरी ने 'एक ओर सीता" तथा "मुरादो भरा दिन" कहानियों को श्रेष्ठ रचनाएं बताते हुए कहा कि यह कहानियां पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों के दैहिक शोषण ,उनकी व्यथा और उनकी आवाज को मुखरित करने वाली , उनके अंदर छिपे दर्द की वास्तविकता से रूबरू कहानी कराने वाली मार्मिक कहानियां हैं, जो पाठक को सोचने पर मजबूर क देती हैं। आलम शाह खान की कहानियों में स्त्रियां हार नहीं मानती , वे अपनी परिस्थितियों से जूझती हैं । उनकी अन्य कहानियों के पात्र भी गरीब मजबूर हो सकते हैं पर वे जुझारू पात्र हैं। वे किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते। उन्होंने कहानीकार की रचना प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि उन्होंने जीवन में जिन विषम परिस्थितियों को जिया और देखा उसे उजागर किया, जो भोगा वही लिखा।

अन्तिम वक्ता के रूप में प्रो. श्रीनिवासन अय्यर ने "अ-नार " कहानी का विश्लेषण कर कहा कि इसमें रचनाकार द्वारा थर्ड जेन्डर की पीड़ाओं को बखूबी सामने लाया गया है।सत्तर के दशक में लिखी यह कहानी अपने समय से बहुत आगे की कहानी है।

फेसबुक लाईव की कड़ियों के अन्त में आलमशाह ख़ान यादगार समिति के अध्यक्ष व मशहूर शायर आबिद अदीब ने आलमशाह खान के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वे खुश तबीयत अदीब थे जो किसी भी छोटे कहलाने वाले आदमी से बात करते ,उसकी व्यथा सुनते तथा कहानियों में भी बेबाकी से उसे बयान करते। उनका साहित्य हमेशा याद रखा जाएगा। उन्होने सभी भागीदारों को धन्यवाद दिया तथा भविष्य में भी समिति द्वारा साहित्यिक गतिविधिया तेज़ करने की घोषणा की।

III. परिणाम

उदयपुर में आयोजित एक साहित्यिक विमर्श में असगर वजाहत ने कहा कि अपने लोगों की स्मृतियों को बचाना जरूरी काम है क्योंकि इससे न केवल हम अपनी परंपरा को सुरक्षित रख पाते हैं बल्कि हमें आगे सही रास्ता खोजने में भी मदद मिलती है. राजनेता जहां जनता से शक्ति लेते हैं वहीं लेखक जनता को शक्ति प्रदान करते हैं. वजाहत ने इस अवसर पर आलमशाह खान पर केंद्रित एक वेबसाइट का लोकार्पण भी किया.

चिंताओं और तकलीफों के चितेरे कथाकार थे आलम शाह खान
सूचना केंद्र सभागार में यह कार्यक्रम राजस्थान साहित्य अकादमी तथा आलम शाह खान यादगार समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ. उद्घाटन सत्र में व्यंग्यकार फारुक आफरीदी ने कहा कि डॉ आलम शाह खान समाज के गरीब, पिछड़े, मजदूर और महिला वर्ग की चिंताओं और तकलीफों के चितेरे कथाकार थे. डॉ खान ने मानव अधिकारों के हनन को लेकर अपनी कहानियां लिखी और मजलूम, बेज़ुबान और हाशिये के समाज के पक्ष में खड़े होने का साहस दिखाया. लेखक प्रबोध कुमार गोविल ने कहा कि डॉ आलम शाह खान का नाम उनके लिए आकर्षण था, शाह साहब की कई कहानियां पढ़ी, उनकी कहानियों पर मजबूत पकड़ थी. उनके साहित्य पर लंबे समय पर चर्चा होती रहेगी. गोविल ने कहा कि अभी उनका उजाला और घना करने की जरूरत है, आंचलिक-जीवन पर उनकी गहरी पकड़ एक धरोहर है, उन्हें अपने जीवन में विभिन्न स्तरों पर लड़ाई लड़नी पड़ी, उनके अद्भुत लेखन के प्रति वे नतमस्तक हैं.[10]

आलम शाह की कहानियां मनोरंजन के लिए नहीं थीं
मंच से वरिष्ठ साहित्यकार गोविंद माथुर ने कहा कि राजस्थान के लेखकों में शाह की चर्चा अधिक नहीं हुई, डॉ आलम शाह खान सर्वहारा वर्ग की कहानियां लिखते थे, उनकी बात लोगों तक पहुंचाने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए. साहित्य अकादमी और अन्य संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए. जानेमाने लेखक डॉ सत्यनारायण व्यास ने कहा कि फासीवादी लोग पाखंड के बल पर सत्ता में या जाते हैं. डॉ आलम शाह खान की आज भी जरूरत है. उनका कबीराना अंदाज गजब का था. वे स्पष्टवादी एवं निर्भीकता के प्रतीक थे. उनके चरित्र में दोहरापन नहीं था. वे विद्रोही प्रवृति के लेखक थे. कबीर की तरह विद्रोही प्रवृति के थे. उनकी कहानियां मनोरंजन के लिए नहीं थीं. जीवन के अस्तित्व का संघर्ष उनकी कहानियों में झलकता था.

शाह की कहानियां हमेशा प्रासंगिक रहेंगी
उर्दू अफसानानिगार डॉ सरवत खान ने कहा कि शाह की कहानियां आने वाली पीढ़ियां पढ़ेंगी और हमेशा प्रासांगिक रहेंगी. हम सभी को मिल कर शाह पर और अधिक काम करना है. किशन दाधीच ने कहा कि शाह पर संस्मरणों की किताब आनी चाहिए. वे खुद्दारी के सिपहसालार थे. उनकी भाषा अपने समय और परिवेश की भाषा है. समय के दुख को निकटता से देखते थे. उनकी कहानियों में समाज का दुख झलकता था. दूसरे सत्र में खान के शिष्य और वरिष्ठ आलोचक प्रो माधव हाड़ा ने वंश भास्कर और वचनिकाओं पर लिखी उनकी शोध-आलोचना की चर्चा की. प्रो हाड़ा ने कहा कि पुराने साहित्य में खान साहब की रुचि गति अद्भुत और अनुकरणीय थी. इस सत्र में दिल्ली से आये युवा आलोचक पल्लव ने समांतर कहानी आंदोलन की चर्चा करते हुए उसमें खान की कहानियों की विशिष्टता को रेखांकित किया.

डॉ खान की कहानियों में मानवीय मूल्यों का चित्रण
तृतीय सत्र की अध्यक्षता राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ दुलाराम सहारण ने की. उन्होंने कहा कि अकादमी राजस्थान के पुरोधाओं के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित करेगी. उन्होंने घोषणा की कि राजस्थान साहित्य अकादमी अगले वर्ष प्रोफेसर आलम शाह खान के सम्मान में दो दिवसीय आयोजन करेगी. सत्र के मुख्य वक्ता भारतीय लोक कला मंडल के निदेशक डॉक्टर लईक हुसैन ने डॉ आलम शाह खान की चर्चित कहानी मौत का मजहब की प्रस्तुति के विविध पक्षों की चर्चा की तथा कहा कि डॉ खान की कहानियों में जिन मानवीय मूल्यों का चित्रण है, उन्हें जन-जन तक पहुंचाना आवश्यक है. इस सत्र में युवा रंगकर्मी सुनील टाक ने आलम शाह खान की कहानियों के नाट्य रूपांतरण एवं लघु फिल्म निर्माण की संभावनाओं की चर्चा की. इस सत्र का संचालन प्रोफेसर हेमेंद्र चंडालिया ने किया. सत्र के अंत में डाक्टर तबस्सुम खान एवं समिति अध्यक्ष आबिद अदीब ने धन्यवाद ज्ञापित किया. भारतीय लोक कला मंडल में कविराज लाइक हुसैन के निर्देशन में आलम शाह खान की कहानी 'मौत का मजहब' का मंचन लोक कला मंडल के खुले प्रांगण में हुआ.

IV. निष्कर्ष

हिन्दी कहानी की विकासयात्रा म राजस्थान का कहानीकार सदैव कदम से कदम मिलाकर चला है और उसने राग-रंग, उपदेश-सिखावन और संगीन साफ बयानी से लेकर लडाकू तेवर तक की कहानियाँ लिखी हैं- ऐसे कहानीकारों की परंपरा गुलेरी से लेकर मोहन सिंह सेंगर, रांगेय राघव से लेकर यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र और फिर आगे मणि मधुकर तक चली आई है-आगे चल रही है।1
राजस्थान की हिन्दी कहानी परंपरा में ही नहीं वरन् हिन्दी कहानी में भी आलमशाह खान का महत्त्वपूर्ण योगदान एवं स्थान है। आलमशाह खान ने अपने अनुभवगत जीवन की संवेदनाओं को मुख्यतः गद्य या कहें कहानी के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। उनके अनुभव संसार में समस्त मानव समाज की संवेदनाएँ हैं, पीडाएँ हैं। उन्होंने जीवन के यथार्थगत परिप्रेक्ष्य को कहानियों के माध्यम से साकार करने का प्रयास किया है।

राजस्थान की हिन्दी कहानी साहित्य को जिन कहानीकारों ने अपनी मिट्टी से जुडकर अपने परिवेश-जगत् के प्रति सजगता व पैनी दृष्टि का परिचय दिया उनमें वे प्रमुख हैं।

आलमशाह खान की ख्याति मुख्यतः कथाकार के रूप में है, उनके कुल पाँच कहानी संग्रह क्रमशः परायी प्यास का सफर, किराये की कोख, एक और सीता, एक गधे की जन्मकुण्डली, सांसों का रेवड है। उनका सम्पूर्ण कहानियों का संग्रह कथायात्रा नाम से प्रकाशित हुआ है। आपकी अंतिम कहानी हम वतन है जो कि संबोधन पत्रिका में प्रकाशित हुई है।

आलमशाह खान की रचनात्मक प्रतिभा काफी प्रखर है और वह सामान्य जीवन के असामान्य कहानीकार हैं। उनकी कहानियों में निम्न वर्ग की दुर्दमनीय दशा का सीधा सरल और असाधारण चित्रण है। उनकी कहानियाँ समाज के उस वर्ग से उठाई गईं हैं, जो बेबसी में अपना जीवन बसर करने को मजबूर हैं। इनकी कहानियों का मूल बिन्दु पुरुष प्रधान समाज में नारी की दयनीय स्थिति, निम्न वर्ग की आर्थिक समस्या, रोटी, कपडा और मकान को तरसते लोग, पूँजीपतियों के शोषण से त्रस्त लोग व दैनिक समस्याओं के बीच टूटते परिवारों की संवेदना है।

वे अपने लेखन कर्म को पावन कार्य मानते थे, इसलिए हमेशा कहते थे- जैसा मैं लिखता हूँ वैसा ही जीना भी चाहता हूँ। यही बडा संकट सामने आता है व्यवस्था से टकराने का। व्यवस्था अपनी जगह अपनी तरफदारी में बेहद पुख्ता और पूरी है और व्यक्ति अपने दायरे में इतना बेबस और अधूरा कि समझौते करने के लिए विवश है। झगडे झंझट के सारे तेवर आजमा कर आखिर मन मारकर चुप होना पडता है फिर भी कोशिश इस बात की रहती है कि लेखकीय सच्चाई कागज पर ही नहीं लेखक के किरदार में भी आए।2
कमर मेवाडी उनके बारे में टिप्पणी करते हुए लिखते हैं, आलमशाह खान हिन्दी कथा साहित्य का ऐसा नक्षत्र है जिसका प्रकाश कभी धुँधला नहीं पडेगा। प्रेमचन्द की परंपरा को विकसित करने में उनका योगदान सराहनीय है।3

इनके लेखन में इनकी आत्मपीडा, व्यथा एक-एक पंक्ति में समाई हुई है। अपने कृतित्व के माध्यम से यह आज भी पाठकों के मन में विद्यमान हैं। आलमशाह खान ने लेखकीय किरदार की भूमिका का निर्वाह अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। सन् 1963 में साप्ताहिक हिन्दुस्तान में अ-नार कहानी प्रकाशित हुई जिसमें एक औरत की विडम्बना को दर्शाया गया है। उस नारी में नारीत्व के लक्षण नहीं हैं, परंतु ममता व वात्सल्य बच्चों में बाँटना चाहती है। खान को एक और सीता, मुरादों भरा दिन, परायी प्यास का सफर, आवाज की अरथी, किराये की कोख आदि कहानियों को लेकर पाठकवर्ग की तीव्र प्रतिक्रिया से गुजरना पडा था। इनके लेखन कार्य पर उंगली उठाई जाने लगी थी।

आलमशाह खान का पहला कहानी संग्रह परायी प्यास का सफर में मध्यम और निम्न वर्ग की आर्थिक विषमता और पुरुषप्रधान समाज में औरतों की शोषित स्थिति को मार्मिक रूप से उभारा गया है। परायी प्यास का सफर एवं आवाज की अरथी में बाल श्रमिक लखना एवं नरसिंघा के शोषित बचपन का यथार्थ चित्रण किया गया है, जिसमें दोनों पात्र अपने पिता के तिरस्कारों एवं दुकान मालिक

के अत्याचारों से पीडित हैं। उनकी कोमल भावनाओं का हृदय विदारक चित्रण इन कहानियों में है। एक और मौत कहानी में ग्रामीण जीवन की आर्थिक कठिनाइयों के बीच जीवनयापन करने की विवशता को कहानीकार ने टोपन की मौत द्वारा दर्शाया है।

बिन मौसम की बरसात में भीगा आकाश आज दूसरे दिन भी एकदम साफ नहीं था फिर भी हवा खुश्क थी- उसमें एक तरह की खनक आ गयी थी। कल उसका बडा नुकसान हो गया था। साँझ घिरते घिरते पानी थमा था तब वह भीगे तन और भारी मन से घर पहुँचा था। सत्ती ने फुरती से कुल्फी की डिब्बयाँ भगोने में औंधा कर उसे चूल्हे पर चढा दिया था। सोचा था, कुल्फी के घोल को पिलाकर बच्चों की भूख बहला दिया जायेगा। पर थोडी से आँच लगते ही दूध फट गया था और वे दोनों फटी फटी आंखों से आकाश को फटते हुए बादलों को देखते रह गए।4

किराये की कोख आलमशाह का दूसरा कहानी संग्रह है। किराये की कोख कहानी सर्वाधिक विवादों में घिरी रहने वाली कहानी है। इसे साम्प्रदायिक सद्भाव की भावना को उभारने वाली कहानी कहा गया था, परन्तु कहानीकार ने इसमें नारी की वास्तविक पीडाओं को उजागर किया था।

शाह के कथाकार की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यही रही है कि आपने सामाजिक वैषम्य को भोगा, उसकी व्यापकता को अनुभव किया और तीव्रता के साथ उसके मूलभूत कारणों को चरित्र के माध्यम से उद्घाटित करने का प्रयास किया है। उनकी कहानियाँ कथ्य और संवेदना सब दृष्टियों से यथार्थवादी हैं, जीवन को जैसा देखा अनुभव किया उसे शब्दों से उभारकर सामने रख दिया।

एक और सीता उनका तीसरा कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में समकालीन परिस्थितियों का चित्रण कहानीकार ने किया है। आजादी के अर्द्धशतक के बाद भी ग्रामीण परिवेश में कोई सुधारात्मक परिवर्तन नहीं हुआ है। इसकी कहानीकार को बहुत पीडा है। सामन्तशाही प्रथा के शोषण का शिकार बेचारा ग्रामीण ही बनता है। लेखक ने इसमें निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाइयों के साथ औरत की इज्जत आबरू से खेलने वाले पुरुषों को आडे हाथों लिया है।

खान ने विभिन्न स्त्री चरित्रों के मानसिक संघर्षों को भी स्वर दिया है। यह मानसिक संघर्ष जिन्दगी के विभिन्न प्रश्नों को लेकर है। अक्सर स्त्रियों के इस मानसिक संघर्ष में शरीर की उत्कट प्यास ही बतलाई जाती है अथवा दो पुरुषों या दो स्त्रियों को लेकर उनकी द्वन्द्वात्मक स्थिति को स्पष्ट किया जाता है। परंतु काँटों नहाई ओस, आने वाले कल में जीते हुए, आज की द्रौपदी इन कहानियों की स्त्रियाँ जिन्दगी के विविध प्रश्नों से जूझ रही हैं।

समाज के विभिन्न स्तरों की स्त्रियाँ यहाँ पर हैं, परंतु अपनी सम्पूर्ण मजबूरी को विशिष्टता को और यातनाओं को लेकर वे उपस्थित होती हैं। अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत स्त्रियाँ अपनी भीतरी आधुनिकता को स्पष्ट करती हैं।

आलमशाह खान के साहित्य में स्थानीय चरित्र, स्थानीय परिवेश एवं स्थानीय भाषा का यथार्थ स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है, अपने साहित्य में राजस्थान की विभिन्न स्थितियों का आकलन किया है और उसे कहानियों के कथानकों में भाषा में मूर्त किया है।

आलमशाह खान परिवेश के संदर्भ में लिखते हैं, परिवेश को पढते पढते पात्रों को परखते निरखते भान हुआ कि कोण और काना मात्रा भिन्न होते हुए भी परिवेश के आग्रह विग्रह और दबाव एक से हैं।5

किसी स्थान के सांस्कृतिक जीवन को साकार करने में उस स्थान की भाषा का प्रयोग होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। खान अपने स्थानीय परिवेश के कण-कण में जिए हैं। अतः उनके कथा साहित्य के पात्रों की भाषा भी उस स्थान की ही भाषा है। जिस स्थान में वे जीते थे। भाषा भी स्थानीय परिवेश को उजागर करने में सहायक सिद्ध होती है, मंगतों उच्चक उठंगों के ठिये ठिकाने में कौन अपना, कौन पराया सब अपने और सब बेगाने। बस जंगली जंगल राज। बेजोर तो मरा वहाँ और वर जारे के दो हिस्से। लाज लिहाज का भी वहाँ क्या काम। सिर टापने, बदन छिपाने की कोई जुगत तो नहीं।6

सांस्कृतिक परंपराएँ भी स्थान विशेष के परिवेश का महत्त्वपूर्ण आयाम है। आलमशाह खान स्थानीय जन जीवन में प्रचलित सागडी प्रथा का उल्लेख कर स्थानिक रंग को गहरा किया है-बात लात तू निबेडना.... उस साहू साँप की बंधक धालेगा सब कूं? सागडी बैठना वां सब के सब! आगेवान झल्लाया और उठ खडा हुआ।7

आलमशाह खान की कहानियों में स्थान की विशेषता भी स्थानिकता के रूप में दृष्टिगत होती है। आलमशाह खान राजस्थान के मेवाड अंचल से विशेष रूप से संबद्ध रहे हैं अतः यहाँ के जन जीवन की विशेषताओं को उसके स्थानिक विशेषतओं के साथ संबद्ध कर अभिव्यक्त किया है। स्थान विशेष की विशेषताओं के अन्तर्गत भौगोलिक, धार्मिक सांस्कृतिक आदि विशेषताओं को रेखांकित किया जा सकता है। निम्न पंक्तियों में स्थानीय वेशभूषा का वर्णन स्थान की विशेषता को ही स्पष्ट करता प्रतीत होता है, पहाडी भीलन वाली घाघरिया। वैसी ही बांग मांग और वैसी ही फैला फू ला उभरा ओढना चोली चीर। ऊपर से धधकती छाती पै जे चाँदी की सांकल हंसली, कानों में बाले, बालों में जंगली फू ल, फ लों में पत्ती और पत्ती में फिर रंग, हाथों में सीप घूंघची के कंगना, पैरों में.... पैरों में जे जकड बंद झांझर...अंगों में बेहिल ठहरावा आँखें काँच पर टिकी हुई, पत्थर बनी हुई।8

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 4, July-August 2024 |

स्थानीय जीवन के बदलते मूल्य भी स्थान विशेष की ओर संकेतित करते ही हैं, भाव वही, गाँव की गैल वही, वही चौपाल, खेत खलिहान सब वही, पर सब तरफ सूना, अजाना, पराया और डसने वाला चौफेर अंधेरा। आनेवाले नयेचुनाव के लिए अभी से बिसात बिछ चुकी थी। एक घोर पर गुलाम सखर और दूसरे पर गिरधर साहू। एक छोर पर राजनीति और दूसरे छोर पर भी राजनीति।9

भौगोलिक विशेषताओं के द्वारा भी स्थान विशेष की विशेषता को कहानीकार सहज रूप में अभिव्यक्त कर देता है, पराई मजूरी में खपने खटने के बाद जो समय सांस बचती है, उसे डूगंरियों के ढलान में यहाँ वहाँ उभरी पत्थर फंस ली को तोडने के बाद कुएं की दो एक रस्सियों की लम्बाई और उतनी ही चडाई की जो जमीन भेत निकल आई है, उस पर खरच कर देते हैं।10

अस्तु, आलमशाह खान का लेखन हिन्दी साहित्य में अपनी तरह की एक महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करवाता है। शाह का रचनाकार हमारी संवेदना के हृतकेन्द्र को झंकृत कर इसे यह सोचन पर मजबूर कर देता है कि हमारे स्व और अंतरतम का बहुत-सा अनुभव अभी अस्पर्शा, अलक्षित, अचिह्नित है। जिसे हमें पूर्ण जिम्मेदारी से नागरिक के रूप में स्वयं को जानने की अपनी प्रक्रिया में पहचानना होगा। उनकी कथा हमारी चेतना का विस्तार करती है।[9,10]

संदर्भ

1.आलमशाह खान सं: राजस्थान के कहानीकार (हिन्दी) दूसरा भाग, राजस्थान साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण, 1977, पृ..2
2.आलमशाह खानः किराये की कोख, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1982, पृ.9
3.कमर मेवाडीः आलमशाह खानः दोस्त नहीं भाई, संबोधन पत्रिका, पृ.7
4.आलमशाह खान सं: एक और मौत, परायी प्यास का सफर, आलमशाह खान, राजस्थान के कहानीकार (हिन्दी) दूसरा भाग, राजस्थान साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण, 1977, पृ.28
5.आलमशाह खानः पीडा के पिरामिड और मेरी रचना प्रक्रिया, पृ.74
6.आलमशाह खानः तिनके का तूफान, कथायात्रा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2003, पृ.281
7.आलमशाह खानः किराये की कोख, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1982, पृ.28
8. आलमशाह खानः एक और सीता, एक और सीता, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1985, पृ.42
9. आलमशाह खानः एक गधे की जनमकुण्डली, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1986, पृ.69
10. आलमशाह खानः एक गधे की जनमकुण्डली, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1986, पृ.73

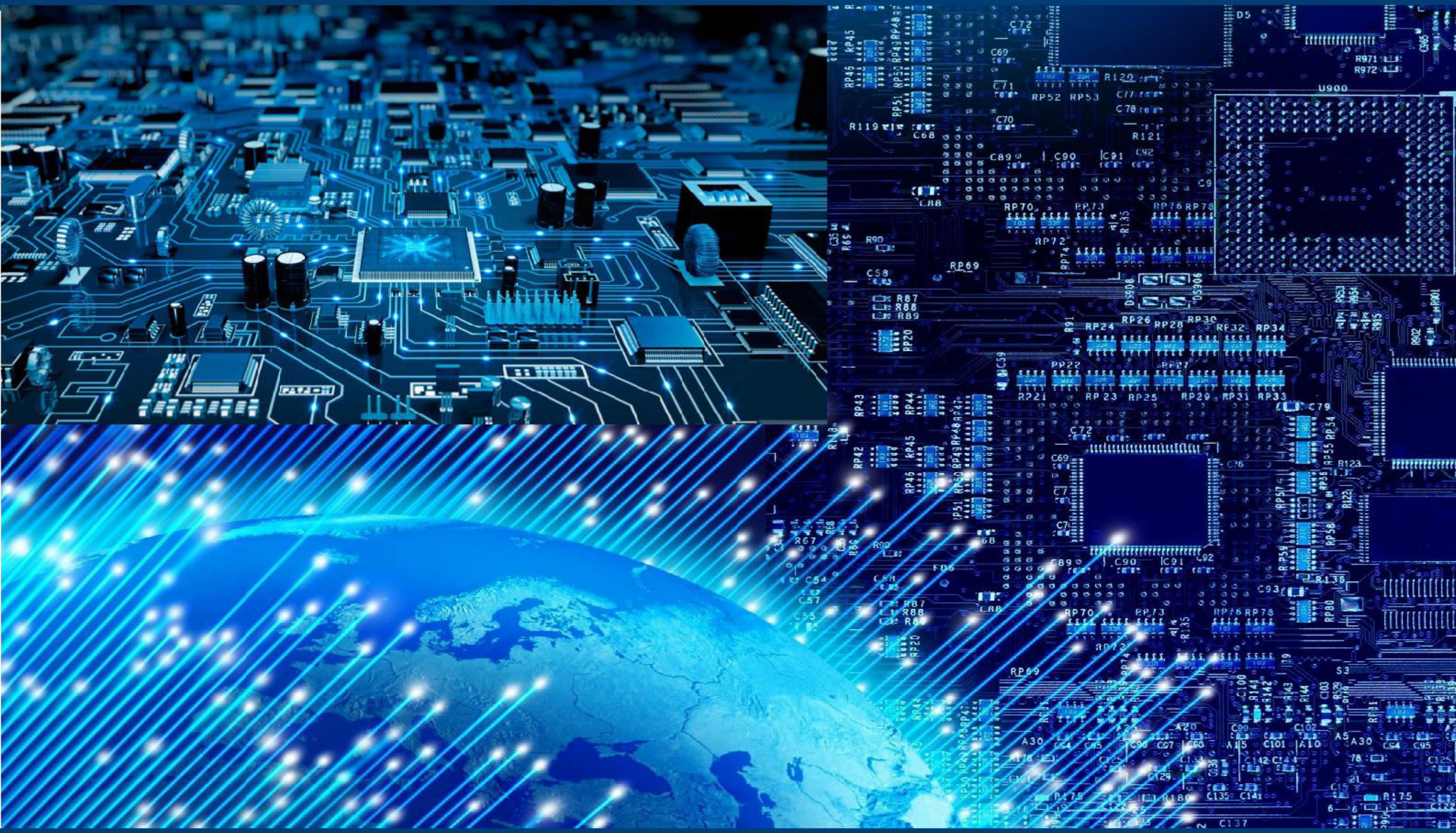

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com